2. कृष् 6. *P. A.* (विलेखने *K.* विलेखे *V.*) 1) radere, scabere, delineare, pingere (v. लिख् praef. वि). Huc traxerim निकृष्, cujus Pass. invenitur in Mah. 1. 2616., ubi significare videtur quendam defodiendi, sepeliendi modum, minus profundum quam is qui per निखन् exprimitur, *einscharren*: यः संस्थितो दह्यते वा निखन्यते वा ऽपि निकृष्यते वा. 2) arare. R. Schl. I. 66. 14.: मे कृषतः क्षेत्रम्, v. कृषि. (Fortasse goth. *FALH* abscondere, sepelire, *filha, falh, fulhum,* mutatâ gutturali in lab. et ष् in gutturalem, v. gr. 99.)

कृषि *f.* (r. कृष् s. इ) aratio, agricultura. Bh. 18. 44.

कृषिन् *m.* (r. कृष् s. इन्) arator. Su. 2. 24.

कृष्ण 1) niger, violaceus. 2) *m. nom. propr.* Krischnus, deus Wischnus humanâ formâ indutus. *Dual.* कृष्णौ Krischnus et Arǵunus. (Russ. черный *c̆ernyĭ* niger ejectâ sibilante.)

कृष्णवर्त्मन् *m.* (nigram viam habens, *BAH.* e praec. et वर्त्मन् via) ignis.

कृष्णसर्प *m.* (e कृष्ण et सर्प) serpens niger. Hit. 67. 7.

कृष्णसार (*BAH.* e कृष्ण et सार q. v.) 1) niger. N. 24. 16. 2) *m.* dorcas, antilope niger. Am.

कृष्णा *f.* nomen Pândavorum uxoris.

कृष्णाय् (*Denom.* a कृष्ण, gr. 585.) nigrare. Hit. 22. 74.: अङ्गारः शीतः कृष्णायते करम्. (Russ. черню *c̆ernjŭ* nigro).

1. कॄ 6. *P.* किरामि (gr. 334.) conjicere, spargere, perfundere, obruere, implere. Git. Gov. 4. 14.: किरति सजलकणजालम्; Dr. 8. 6.: शक्तितोमरनाराचैः … कीर्यमाणः. (Gr. *κεράω, κεράννυμι, κίρνημι,* quorum ultimum formâ cum कृणामि cl. 9. convenit, cf. पॄ, quod ex कॄ mutatâ gutturali in labialem ortum esse videtur.)

c. अनु implere. Mah. 1. 4340.: वणिग्भिश्चा ऽन्वकीर्यन्त नगराणि. – अनुकीर्ण impletus. Dr. 6. 2. 8. 48. A. 7. 2.

c. अभि implere. R. Schl. II. 14. 53.: अभ्यकीर्यत शोकेन.

c. अव 1) *i. q. simpl.* A. 3. 32.: अस्त्रपूगेन … भूतम् अवाकिरम्. अवकीर्ण impletus, plenus. Mah. 1. 7840. 2) deserere, relinquere. Mah. 1. 3057.: अवकीर्य च मां याता परात्मजम् इवा ऽसती. 3) *Pass.* deserere, se dispandere, dilatare. R. Schl. I. 38. 14.: समन्ताद् अवकीर्यत (omisso augmento) समन्ततस्तु तान् देवीम् अभ्यषिञ्चत पावकः.

c. अव praef. सम् *i. q. simpl.* A. 3. 25.: तम् … शरवर्षेण समवाकिरम्.

c. आ implere. आकीर्ण impletus, plenus. N. 12. 2. 113. A. 6. 7. (Cf. lat. *acervus.*)

c. आ praef. अप vacuefacere, exinanire; Mah. 1. 2851.: ना ऽपुष्पः पादपः कश्चित् षट्पदैर् ना ऽप्य् अपाकीर्णः.

c. आ praef. सम् implere. समाकीर्ण. N. 12. 38.

c. उत् 1) superfundere. Ur. 37. 5.: उत्कीर्णा इव वासयष्टिषु निशा निद्रालसा बर्हिणः. 2) perforare? Ragh. 4. 59.: मत्तेभरदनोत्कीर्ण; v. sq.

c. उत् praef. सम् *id.* Ragh. 1. 4.: मणौ वज्रसमुत्कीर्णे (Schol. Calc. = हीरेण छिद्रिते.

c. परि 1) circumfundere, undique implere. Ragh. ed. Calc. 8. 35.: भ्रमरैः … परिकीर्णा (Schol. परितः सर्वतः कीर्णा व्याप्ता). 2) committere, tradere. Ragh. 18. 32.: महीम् महेच्छः परिकीर्य सूनौ.)

c. प्र se dissipare, se disspergere. Ram. I. 9. 20.: सर्वतः प्रकिरन्ति स्म ललमाना वराङ्गनाः; – प्रकीर्ण expansus, elatus. A. 6. 2.: फेनवत्यः प्रकीर्णाश्च … ऊर्मयः; 10. 63.: प्रकीर्णकेशी. (Cf. lat. *prôcêrus,* quod etiam ad कृष् trahi potest, unde प्रकृष्ट longus.)

c. वि spargere, expandere. Hit. 9.: तण्डुलकणान् विकीर्य; Man. 11. 196.: विकिरेत् यवसं गवाम्; A. 9. 18.: विकीर्णैर् इव पर्वतैः. – श्वासान् विकरितुम् suspiria ducere. Git. Gov. 5. 16.

c. सम् 1) confundere, miscere. Mah. 1. 3479.: सङ्कीर्णाचारधर्म; 2) implere. In. 1. 28.: अप्सरोगणसङ्कीर्ण; Su. 2. 24.: अस्थिकङ्कालसङ्कीर्ण.

2. कॄ 9. *P.*: कृणामि (= *κίρνημι,* v. कॄ cl. 6., हिंसायाम् *K.* हिंसे *V.*) offendere, laedere, ferire, vexare, occidere. (Cf. चिरि, चीर्ण, चूर्ण्.)